वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

जौनपुर, उत्तर प्रदेश

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च, 2025





श्रीमती आनंदीबेन पटेल

माननीय कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

''दहेज प्रथा बंद होना चाहिए। दहेज प्रथा से घर में लड़की को मारा पीटा जाता है, उसका शोषण किया जाता है। हम सभी को दहेज प्रथा के विरूद्ध खड़े होकर इसे बंद करना होगा, तभी एक विकसित समाज, विकसित राष्ट्र एवं विकसित प्रदेश का निर्माण होगा''

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च, 2025

प्रकाशक

वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

जौनपुर - 222003 (उ०प्र०)

वीर बहादुर सिंह पूर्वांञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर



वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय (पूर्व में पूर्वांचल विश्वविद्यालय) की स्थापना जौनपुर के लोगों के परिश्रम तथा प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. वीर बहादुर सिंह के प्रयास के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित गजट संख्या 5005/15–10–87–15 (15)–86 टी.सी. दिनांक 28 सितम्बर 1987 के तहत 02 अक्टूबर 1987 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के पावन पर्व पर की गई। कालान्तर में पूर्वांचल विश्वविद्यालय का नाम स्वर्गीय वीर बहादुर सिंह की स्मृति में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय रखा गया।

प्रारम्भ में विश्वविद्यालय का कार्यालय प्रथमतः टी.डी. कालेज जौनपुर के फार्म हाउस के भवन पीली कोठी में प्रारम्भ हुआ। उत्तर प्रदेश शासन ने विश्वविद्यालय हेतु भूमि अधिग्रहित करने के लिए कुल 85 लाख रूपये की धनराशि स्वीकृत की तथा अधिकारियों सहित कुल 67 पद स्वीकृत किये। शासन द्वारा सृजित पदों पर नियुक्तियां हुई और यहीं से विश्वविद्यालय की विकास यात्रा प्रारम्भ हुई। जिला प्रशासन ने जौनपुर शहर से लगभग 12 किमी. दूर जौनपुर शाहगंज मार्ग पर देवकली, जासोपुर ग्राम सभाओं की कुल 171.5 एकड़ भूमि अधिग्रहित कर विश्वविद्यालय को उपलब्ध कराई।

वर्ष 1994 में विश्वविद्यालय ने अपने नवनिर्मित निजी प्रशासनिक भवन में कार्य करना प्रारम्भ किया और इसी के साथ ही विश्वविद्यालय का आवासीय स्वरूप विकसित होना प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में परिसर स्थित विभिन्न पाठ्यक्रमों में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र–छात्राओं के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रहने के लिए फ्लैट्स तथा ट्रांजिट हॉस्टल की भी व्यवस्था है। इसके अलावा छात्र सुविधा केन्द्र, संगोष्ठी भवन, अतिथि गृह, शिक्षक अतिथि गृह, राष्ट्रीय सेवा योजना भवन, रोवर्स–रेंजर्स भवन हैं। इसके साथ ही विभिन्न संकायों के लिए अलग–अलग भवनों का निर्माण किया गया है जो अत्याधुनिक लैब, इण्टरनेट – वाईफाई एवं सी.सी. कैमरे से सुसज्जित हैं। इस वर्ष विष्वविद्यालय को नैक द्वारा A+ ग्रेड की प्राप्ति हुई।

विद्यार्थियों को शहर से दूर परिसर में उच्च गुणवत्ता से युक्त शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने के लिए विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय संचालित है। इसमें परम्परागत पुस्तकालय सुविधा के अतिरिक्त इसका आधुनिकीकरण करके ई–लाइब्रेरी के तहत छात्रों को ई–जर्नल, ई–बुक की सुविधा उपलब्ध करायी गई है, इसके साथ ही एडुसैट व्यवस्था के अन्तर्गत छात्रों को इग्नू, यूजीसी, एआईसीटीई वर्चुअल शिक्षण कार्यक्रम की सुविधा प्रदान की गई है। परिसर के छात्रों को विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के योग्य बनाने हेतु आधुनिक खेल सुविधा से युक्त एकलव्य स्टेडियम का भी निर्माण किया गया है। विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से विश्वविद्यालय का नाम अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर पहुँचाया है और पिछले पांच वर्षों से लगातार उत्तर भारत के विश्वविद्यालय एवं उत्तर प्रदेश में शीर्ष स्थान पर है। राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा विभिन्न जनपदों में असहाय लोगों के लिए बापू बाजार का आयोजन किया जाता है। इंजीनियरिंग संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए विश्वविद्यालय के पड़ोसी गांव देवकली में आधुनिक संसाधनविहीन बच्चों को निःशुल्क कोचिंग पढ़ायी जाती है।

वर्तमान में पूर्वान्चल के दो जनपदों के 589 महाविद्यालय विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं। विश्वविद्यालय परिसर में स्नातक स्तर पर बी.टेक इंजीनियरिंग डिप्लोमा इन मैकेनिकल इंजीनियरिंग (प्रोडक्शन) एवं बी फार्मा की शिक्षा दी जा रही है। इसके अतिरिक्त स्नातकोत्तर स्तर पर एम. टेक.,एम.सी.ए., एम.बी.ए., एम.बी.ई., एग्री बिजनेस, ई–कामर्स, एम.एफ.सी., एम.एच.आर. डी., मास कम्यूनिकेशन, व्यावहारिक मनोविज्ञान, एम.एस.सी. बायोटेक्नॉलाजी, पर्यावरण विज्ञान, अप्लाइड माइक्रो बायोलॉजी, अप्लाइड बायोकेमेस्ट्री विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है। विश्वविद्यालय परिसर में प्रो० राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) भौतिकी एवं शोध संस्थान में एम. एस.सी–फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथमेटिक्स एवं एप्लाइड जियोलॉजी पाठ्यक्रम संचालित है। संस्थान में दो शोध केंद्र नैनो साइंस एंड टेक्नोलॉजी व गैर परंपरागत ऊर्जा शोध केंद्र संचालित हो रहे है। बी.ए. एल.एल.बी (पांच वर्षीय इंटीग्रेटेड) पाठ्यक्रम प्रारंभ है। बी.कॉम. (आनर्स), बी.सी.ए., बी.एस.सी. (गणित, भौतिकी, भूगर्भ विज्ञान), बी.एस.सी. (जंतु, वनस्पति, रसायन विज्ञान, पर्यावरण एवं सूक्ष्म जीव विज्ञान), बी.एस.सी (आनर्स) बायोटेक्नोलॉजी एवं बी.एस.सी. (आनर्स) पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रमों की शुरुआत भी विगत वर्ष से हुई है। परिसर में डी. फार्मा एवं बी.ए. पाठ्यक्रम भी संचालित हो रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पाठ्यक्रम के अंतर्गत एक वर्षीय वैदिक ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम, एक वर्षीय वैदिक कर्मकांड डिप्लोमा पाठ्यक्रम एवं एक वर्षीय वैदिक वास्तु शास्त्र डिप्लोमा पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय परिसर में शुरू किया जा रहा है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।



संदेश

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर द्वारा विद्यार्थियों की विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों पर आधारित पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारा सौभाग्य है कि हमारी वात्सल्य एवं ममतामयी भाव से ओत–प्रोत, सामाजिक सरोकारों से अंतः करण से जुड़ी, करुणा और स्नेह की प्रतिमूर्ति, हमारी संरक्षक, मार्गदर्शक एवं प्रेरणा–स्रोत आदरणीय कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी के आशीर्वाद से हमने विद्यार्थियों के व्यक्तिव विकास के लिए विविध कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

यह न केवल हमारे विद्यार्थियों की रचनात्मकता, प्रतिबद्धता और उत्कृष्टता को उजागर करता है, अपितु विश्वविद्यालय की समग्र प्रगति और समर्पण का भी परिचायक है। राजभवन के दिशा–निर्देश पर आयोजित हुए कार्यक्रमों से विद्यार्थियों में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। हमारी संरक्षक परम आदरणीया कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी ने विद्यार्थियों को राजभवन में भी अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका दिया यह विद्यार्थियों के जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण और विशेष क्षण रहा।

माननीय कुलाधिपति जी की सोच है कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान न दे अपितु समाज से भी जोड़े। विद्यार्थी अपनी प्रतिभा से सामाजिक परिवर्तन में अपना योगदान दे यह बहुत आवश्यक है. हम छोटे–छोटे प्रयासों से दुनिया को बेहतर बनाने में अपना योगदान से सकते हैं। इस किताब में दी गई गतिविधियाँ प्रदर्शित करतीं है कि हमारे विद्यार्थी न सिर्फ़ अपनी पढ़ाई में बहुत अच्छा कर रहे हैं, बल्कि वे कई अलग–अलग गतिविधियों में शामिल होकर विश्वविद्यालय को गौरवान्वित भी कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दृष्टिगत भाषण एवं नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह आयोजन न केवल हमारी सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतीक है, बल्कि यह हमारी नवोन्मेषी सोच, सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति की शक्ति का भी उत्सव है।

नाटक और भाषण दोनों विधाएं समाज को दर्पण दिखाने का कार्य करती हैं। एक ओर जहाँ भाषण विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने की कला है, वहीं दूसरी ओर नाटक हमें मानवीय संवेदनाओं की गहराई से परिचित कराता है।

इस प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों को न केवल मंच पर बोलने और अभिनय करने का अवसर मिला, बल्कि आत्म–विश्वास, नेतृत्व क्षमता, और टीम वर्क जैसे महत्वपूर्ण गुण भी विकसित हुआ है ।

मैं इस रचनात्मक प्रयास के लिए गतिविधियों के नोडल अधिकारियों, शिक्षकों एवं संपादकीय टीम एवं प्रतिभागी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पुस्तक आने वाले वर्षों में और अधिक प्रेरणा और नवाचार का स्रोत बनेगी।

प्रो० वन्दना सिंह
कुलपति

"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च, 2025)"

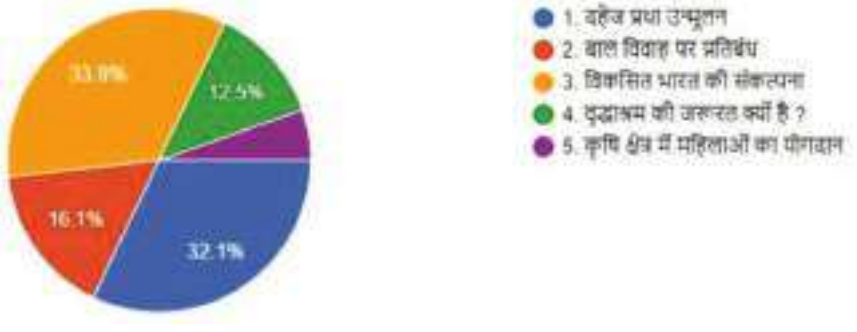
राज्यपाल सचिवालय, उत्तर प्रदेश लखनऊ के पत्रांक ई – 1112/32–जी0एस0/2024–XXIII दिनांक 21 फरवरी, 2025, के क्रम में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च, 2025 के अवसर पर वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में प्रथम चक्र की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक 28 फरवरी, 2025 को विश्वविद्यालय, परिसर में किया गया। उक्त कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए कुलपति प्रो0 वन्दना सिंह ने महिला अध्ययन केन्द्र की प्रभारी डॉ0 जान्हवी श्रीवास्तव को नोडल अधिकारी एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ0 शशिकांत यादव को नामित किया गया।

भाषण एवं नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च, 2025 के क्रम में 28 फरवरी, 2025 को दहेज प्रथा उन्मूलन, बाल विवाह पर प्रतिबंध, विकसित भारत की संकल्पना, वृद्धाश्रम की जरूरत क्यों? एवं कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमे प्रतिभागियों को 5 मिनट का समय दिया गया। साथ ही साथ अहिल्या बाई होलकर, द्रौपदी वस्त्रहरण, श्रवण कुमार की अपने माता–पिता के प्रति भक्ति, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश, राम वनवास, भरत मिलाप विषय पर नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे प्रतिभागियों को 10 मिनट का समय दिया गया।

भाषण एवं नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले प्रतिभागियों का विवरण

भाषण प्रतियोगिता में कुल 56 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया एवं नाट्य प्रस्तुति में कुल 37 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।





भाषण एवं नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल द्वारा प्रत्येक प्रतियोगिता में सम्मलित प्रतिभागियों में से प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया जिसका विवरण निम्नवत है :–

क्र. सं	प्रतियोगिता का नाम	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	विश्वविद्यालय / महाविद्यालय का नाम	प्रतियोगिता का परिणाम / विषय
1.	भाषण प्रतियोगिता	अभिनव कीर्ति पाण्डेय	बी.ए.एल.एल.बी.	वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	प्रथम / विकसित भारत की संकल्पना
2.		शिवम पाण्डेय	बी. ए.एल.एल.बी.	वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	द्वितीय / विकसित भारत की संकल्पना
3.	नाट्य प्रस्तुति	सूरज कुमार मौर्य	एम. ए.	सल्तनत बहादुर पी. जी. कालेज बदलापुर, जौनपुर	टीम प्रथम / द्रौपदी वस्त्रहरण
4.		अंजली पाल	एम. ए.		
5.		सिद्धार्थ तिवारी	बी.ए.		
6.		अनन्या सिंह	बी. सी. ए.		
7.		गौरव जायसवाल	बी.ए.		
8.		आरती मौर्या	बी.ए.		
9.		गोल्डी	बी.ए.		
10.		अन्तिमा यादव	बी.ए.		
11.		काजल उपाध्याय	एम. ए.		
12.		श्रेया मौर्या	बी.ए.		
13.	नाट्य प्रस्तुति	प्रिया मौर्या	बी.ए.एल.एल.बी.	वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	टीम द्वितीय / अहिल्या बाई होलकर
14.		स्वीटी यादव	एम. एस. सी.		
15.		खुशबू मोदनवाल	एम. ए.		
16.		मुस्कान सिंह	एम. ए.		
17.		नंदिनी सोनकर	एम. एस. सी .		
18.		आँचल कश्यप	बी. एस. सी .		
19.		अंजली यादव	बी. एस. सी .		
20.		सविता प्रजापति	बी. एस. सी .		
21.		नजरे	बी.ए.एल.एल.बी.		
22.		आयुष कुमार	बी.ए.एल.एल.बी.		
23.		शिवम पाण्डेय	बी.ए.एल.एल.बी.		

द्वितीय चक्र

द्वितीय चक्र की प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 04 मार्च, 2025 को महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी द्वारा किया गया। जिसमे 06 विश्वविद्यालयों के समूह में निर्णायक मंडल द्वारा वीर बहादुर पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के अभिनव कीर्ति पाण्डेय, बी.ए.एल.एल.बी. के छात्र को विकसित भारत की संकल्पना विषय पर भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्रदान किया गया।

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में आयोजित
द्वितीय चक्र की प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले
अभिनव कीर्ति पाण्डेय, बी.ए.एल.एल.बी. का भाषण
(विषय : विकसित भारत की संकल्पना)



एक तपती दोपहर है नारियों की जिंदगी, एक पथरीली डगर है नारियों की जिंदगी ।
चाहे हो अग्नि परीक्षा, चाहे चौसर की बिसात हर सदी में दाँव पर है नारियों की जिंदगी ।।

महोदय,

वो नारियाँ जो समाज के सृजन से विकास तक, अवनति से उन्नति की ओर और रिक्तता से पूर्णता की ओर अग्रसर करने का दमखम रखती हैं । और वही महिलाएं जो विकसित भारत की संकल्पना का आधार हैं ।

महोदय, आज से करीब तीन वर्ष पूर्व स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने लाल किले की प्राचीर से यह कहा था कि आजादी के अमृत काल में अगर हमें अपने सपनों के भारत का निर्माण करना है तो हमें संकल्पों के तौर पर पंच प्रण लेने होंगे जो हमारे सपनों के विकसित भारत का निर्माण करेगा। और उसमें प्रथम प्रण या नारी सशक्तीकरण (राष्ट्र में सशक्त नारियाँ)। आज हमें यह समझना और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है कि विकसित भारत का निर्माण तभी सम्भव है जब हम संकल्पों के तौर पर, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति प्राप्त कर अपनी विरासत पर गर्व भी अनुभूति करना प्रारम्भ कर दें।

हमें तो यही पढ़ाया गया है जिस राष्ट्र में बहुमंजिला इमारते हो जिस राष्ट्र में यातायात की सुगमता और बेहतर सड़के, शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार और तमाम ऐसे बहुआयामी परिवर्तनीय साधन जो हमारे जीवनयापन को सुगम बना दें वे जिस राष्ट्र के पास ज्यादा बेहतर होंगे वही विकसित राष्ट्र होगा। परन्तु महोदय मेरा मानना है कि इन तत्वों के अलावा राष्ट्र विकसित होता है अपनी नारीशक्ति से युवाशक्ति से और शिक्षित समाज से। इसका सबसे बड़ा उदाहरण हमे तब देखने को मिलता है जब फ्रांस की सेना का सेनापती नेपोलियन बोनापार्ट ने एक समय कहा था कि यदि आप मुझे शिक्षित महिलाएँ दें, तो मैं आपको विकसित समृद्धशाली राष्ट्र दे पाऊँगा।

यदि मैं विकसित भारत के अर्थ को साधारण तरीके से समझाऊँ तो मैं यह कहूंगा कि विकासित भारत एक मानवीय शरीर की भाँति है, जिस शरीर में संकल्प रुपी रुधिर बह रहा है जिसके बिना राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता इसका एक बाजू है नारीशक्ति तो दूसरा बाजू है युवाशक्ति इसका एक पांव है किसान तो दूसरा पांव है नवजवान और इसका दिल और मस्तिष्क बनता है इनकी बेहतर विचारधारा और इसकी प्राकृतिक धरोहरो से। लाइफ स्टाइल फार इन्वायरमेण्ट अर्थात् लाइफ के फॉर्मूले के तौर पर सस्टेनिविलिटी को अपनाकर ग्रीन डेवलपमेंट के साथ विकसित होने की ओर बढ़ रहे भारत को यह समझना होगा की भारत को विकासित करने में इन महिलाओ और युवाओं की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण क्यों हो जाती है। क्योंकि ''एतत देशे प्रशूतस्य सकासाद अग्रजन्मना स्वां स्वां चरित्रम शिक्षणेन पृथिव्याम सर्वमानवः'' के सिद्धांत पर आज युवा विश्व में भारत की सबसे बड़ी युवा शक्ति होने के नाते हमारा सबसे बड़ा ब्रह्मास्त्र हैं क्योंकि हम युवा अर्थ से आगे बढ़कर परमार्थ के लिए कार्य करके अपना अनुभव पेश करते हैं। और साथ ही साथ हम स्थापित करते है उस परम्परा को जो साबित करती है कि हम विकसित भारत बनाने के साथ–साथ सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड की शान्ति की कामना कुछ इस प्रकार करते हैं। – ब्रहमा मुरारी त्रिपुरांतकारी भानुः शशि भूमि सुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रा शनि राहु केतवरू सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु।। और सम्पूर्ण विश्व आज टेक्नोलॉजिकल ट्रान्सफार्मेशन और डिजिटलाइजेशन के इस दौर में भारत को विकसित, होते हुए इसलिए भी देखना चाहता है क्योंकि विकसित भारत की यात्रा में भारत विश्व को शांति और सुलह के साथ–साथ, भारत आदिकाल से ही यह संदेश देता आया है कि विकसित भारत के विकास रथ की यात्रा युद्ध के राह पर नहीं अपितु बुद्ध के राह पर चलकर पूरी की जाएगी। और हम आज विकसित भारत के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ते हुए विश्व की सबसे प्राचीनतम सभ्यता और संस्कृति होने का का हमारा अनुभव आज जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान के रूप में हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। और इसलिए रिसर्च से डेवलपमेन्ट, डेवलपमेण्ट से इम्पावरमेंट की ओर बढ़ते हुए हमें यह समझना होगा कि डेवलपमेंट का रास्ता इन्वेस्टमेण्ट से इन्वेस्टमेण्ट का रास्ता स्टाईअप से, स्टार्टअप का रास्ता स्किल डेवलपमेण्ट से और स्किल डेवलपमेंट का रास्ता एजुकेशन से होकर गुजरता है इसलिए समय आ चुका है कि हम सरकारी नीतियों की बजाय स्वनीति से विकसित होने की ओर बढें और रोजगार से एक कदम आगे बढ़कर स्वरोजगार को, अपनाते हुए हम ऐसी स्किल्स एजुकेशन को अपनाएँ जिससे हमें मोटिवेशन और इन्सपिरेशन के साथ साथ अपनी भारतीय विरासत पर गर्व शामिल हो। आज विकसित भारत की राह में आवश्यकता है कि हम ग्रीन एनर्जी, रोबोटिक्स, ए.आई, नैनोटेक्नॉलॉजी के साथ उन सभी नवीन स्टार्टअप के साथ लोकल फार वोकल हो जानें की जो भारत को मदद कर रहे हैं विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक, महाशक्ति बनाकर विकसित भारत बनाने में।

अंत में– विकसित भारत का संकल्प लेकर राष्ट्र आगे बढ़ चला है।
पथ सदा हमने चुना वह विश्व का जिसमें भला है।।

अभिनव कीर्ति पाण्डेय
छात्र – बी.ए.एल.एल.बी.
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

जय हिंद, जय भारत!

द्वितीय चक्र की प्रतियोगिता के प्रतिभागी
शिवम पाण्डेय, बी.ए.एल.एल.बी. का भाषण
(विषय : विकसित भारत की संकल्पना)



विकास का यूरो–केंद्रित दृष्टिकोण: 'विकास का यूरो–केंद्रित दृष्टिकोण' (Euro & centric View of Development) शब्दावली यूरोपीय या पश्चिमी दृष्टिकोण के आसपास केंद्रित विकास को समझने और उसका मूल्यांकन करने के दृष्टिकोण को संदर्भित करती है। यह परिप्रेक्ष्य ऐतिहासिक रूप से आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास संबंधी चर्चा पर हावी रहा है, जहाँ प्रायः यूरोपीय समाजों के अनुभवों एवं उपलब्धियों को प्रगति के मानक या आदर्श के रूप में रखा जाता है। इसकी आलोचना होती रही है क्योंकि यह विकास के प्राथमिक मापकों के रूप में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और औद्योगीकरण जैसे पारंपरिक आर्थिक संकेतकों का उपयोग करता है।

विज़न इंडिया@2047 : विजन इंडिया@2047 (Vision India@2047) अगले 25 वर्षों में भारत के विकास का खाका तैयार करने के लिये भारत के शीर्ष नीति थिंक टैंक नीति आयोग (NITI Aayog) द्वारा शुरू की गई एक परियोजना है। परियोजना का लक्ष्य भारत को नवाचार एवं प्रौद्योगिकी में वैश्विक अग्रणी देश, मानव विकास एवं सामाजिक कल्याण का मॉडल और पर्यावरणीय संवहनीयता का चौंपियन या उत्साही पक्ष–समर्थक बनाना है। विकसित भारत' के विभिन्न पहलू कौन–से हैं ? संरचनात्मक रूपांतरण : यह निम्न उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे कृषि) से उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे विनिर्माण एवं सेवाएँ) की ओर संसाधनों के संक्रमण को संदर्भित करता है। इससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है, रोज़गार सृजित हो सकते हैं और गरीबी कम हो सकती है। श्रम बाज़ारों का निर्माण : इसमें श्रम आपूर्ति की गुणवत्ता एवं मात्रा में सुधार लाना, श्रमिकों के कौशल एवं रोज़गार योग्यता को बढ़ाना और निष्पक्ष एवं कुशल श्रम नियमों को सुनिश्चित करना शामिल है। इससे श्रम उत्पादकता बढ़ सकती है, अनौपचारिकता कम हो सकती है और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा मिल सकता है। प्रतिस्पर्द्धात्मकता बढ़ाना : इसमें कंपनियों की दक्षता एवं नवाचार को बढ़ाना, उत्पादों एवं सेवाओं की गुणवत्ता एवं विविधता में सुधार करना और घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों का विस्तार करना शामिल है। इससे आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा मिल सकता है, निर्यात बढ़ सकता है और निवेश आकर्षित हो सकता है। वित्तीय और सामाजिक समावेशन में सुधार : इसमें गरीबों और हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिये वित्तीय सेवाओं और सामाजिक कल्याण योजनाओं की पहुँच एवं सामर्थ्य का विस्तार करना शामिल है। इससे उनकी आय, बचत और उपभोग के साथ–साथ उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और सशक्तीकरण में सुधार हो सकता है। शासन सुधार, इसमें शासन की संस्थाओं और प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना शामिल है, जैसे विधि का शासन, जवाबदेही, पारदर्शिता और भागीदारी। इससे सार्वजनिक वस्तुओं एवं सेवाओं के वितरण में सुधार हो सकता है, भ्रष्टाचार कम हो सकता है और विश्वास एवं की वृद्धि हो सकती है। हरित क्रांति के अंतर्गत अवसरों का लाभ उठाना : इसमें नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और जलवायु प्रत्यास्थता जैसी हरित प्रौद्योगिकियों और अभ्यासों को अपनाना और उन्हें बढ़ावा देना शामिल है। इससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम किया जा सकता है, पर्यावरणीय क्षति का शमन हो सकता है और वृद्धि एवं विकास के नए अवसर पैदा हो सकते हैं ।

आर्थिक विकास से परे भारत के विकास के लिये मुख्य विचार–विषय कौन–से हैं ? विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की चाहत भारत की सभी आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकेगी। हालाँकि भौतिक विकास महत्त्वपूर्ण है, यह वर्ष 2047 तक के भारत के विभिन्न लक्ष्यों में से केवल एक है। विभिन्न आलोचक पारंपरिक आर्थिक विकास मॉडल पर सवाल उठाते रहे हैं, जहाँ वे प्रगति और आधुनिकता संबंधी विचारों को चुनौती देते हैं। यह उपयुक्त समय है कि 'विकसित भारत' की अवधारणा पर पुनर्विचार किया जाए और भारत के विकास के अन्य महत्त्वपूर्ण पहलुओं को भी चिंतन के दायरे में लाया जाए।

विचार योग्य अन्य पहलू कौन–से हैं ? विकास की इस यात्रा में खुशहाली (Happiness) मुख्य लक्ष्य होना चाहिये। खुशहाली प्राप्त किये बिना विकास का कोई अर्थ नहीं है। विडंबना यह है कि दुनिया के कई देश विकसित तो हो गये, लेकिन लोग खुश नहीं हैं। 'विकसित भारत' के बजाय 'खुशहाल भारत–विकसित भारत' (Happy India & Developed India) का थीम अपनाया जाना चाहिये। समृद्ध राष्ट्र अनिवार्य रूप से खुशहाल राष्ट्र नहीं हैं। समृद्ध देशों ने केवल सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय के विषय में अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण संकेतकों के संदर्भ में वे बुरी तरह विफल रहे हैं। विकास का यह दृष्टिकोण मानसिक स्वास्थ्य और सेहत की अनदेखी करता रहा है। वैश्विक खुशहाली रिपोर्ट (World Happiness Report) 2023 से पता चलता है कि कई विकसित देश खुशहाली के संकेतक पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। कुछ देशों ने दोनों ही स्थितियों को संतुलित तरीके से हासिल किया है। फिनलैंड, डेनमार्क, आइसलैंड और नीदरलैंड जैसे देश सबसे खुशहाल देश हैं। उन्होंने सामाजिक विघटन की कीमत पर विकास प्राप्त नहीं किया है। इसके बजाय, उन्होंने सामाजिक संबंध और सहायता

प्रणालियों का निर्माण किया है। भारत का मामला इसलिये भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद खुशहाली के मामले यह 137 देशों की सूची में 126वें स्थान पर है। विकास और 'विकसित भारत' का एजेंडा एक स्वप्न बनकर ही रह जाएगा यदि हम खुशहाली सूचकांक में बेहतर प्रदर्शन करने में विफल रहें।

भारत के लिये खुशहाली–प्रेरित विकास मॉडल का क्या महत्त्व है? भारत के लिये खुशहाली–प्रेरित विकास मॉडल (Happiness & Induced Development Model) अत्यधिक प्रासंगिक है क्योंकि हम सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक अनिवार्यताओं द्वारा उल्लेखनीय रूप से शासित होते हैं। इसके विपरीत, केवल आर्थिक विकास पर केंद्रित वर्तमान मॉडल हमारी सामाजिक व्यवस्था के लिये अत्यधिक विघटनकारी है। विकास का यह रूप विकारों और अपराध को जन्म देता है। इस विकास चक्र में जीवन के सभी पहलू एक साथ नहीं बदलते हैं, जिससे असंतुलन और विरोधाभास उत्पन्न होते हैं। ऐसी चीज़ें हमारे समाज में दिखाई दे रही हैं, जहाँ औद्योगिक एवं आर्थिक विकास चिंताजनक रूप से बदल रहे हैं, लेकिन जीवन के गुणवत्ता संबंधी पहलू पिछड़ते जा रहे हैं। खुशहाली के मापन कई देशों में सार्वजनिक नीति के लक्ष्य बन गए हैं। खुशहाली अब कोई व्यक्तिपरक मामला नहीं रह गया है। विकास के खुशहाली–प्रेरित मॉडल को विकास या प्रगति के साथ संलग्न करना। मानव विकास सूचकांक (HDI) को एकीकृत करना : संकेतकों में HDI को वेटेज या महत्त्व दिया जाए, जिसमें जीवन प्रत्याशा, शैक्षिक प्राप्ति और आय स्तर शामिल होते हैं। यह पारंपरिक आर्थिक संकेतकों से परे 'वेल–बीइंग' या सेहत/कल्याण का अधिक व्यापक मापन प्रदान करता है। सामाजिक विकास सूचकांक (SDI) का समावेशन, सामाजिक विकास के लिये संयुक्त राष्ट्र अनुसंधान संस्थान (UN Research Institute for Social Development) के सामाजिक विकास सूचकांक को संलग्न करें, जिसमें 16 मुख्य संकेतक शामिल हैं। यह विभिन्न सामाजिक पहलुओं के संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है, जिससे विकास की समग्र समझ में योगदान प्राप्त हो सकता है। 'ग्रीन इंडेक्स' को अपनाना : विश्व बैंक के हरित सूचकांक (Green Index) का उपयोग करें, जो उत्पादित परिसंपत्तियों, प्राकृतिक संसाधनों और मानव संसाधनों के आधार पर किसी देश की समृद्धि का मूल्यांकन करता है। यह सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप है और आर्थिक प्रगति एवं पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के बीच संतुलन को दर्शाता है। अंतर्राष्ट्रीय मानव पीड़ा सूचकांक पर विचार करना : मानव पीड़ा से संबंधित मापदंडों के आधार पर किसी देश की सेहत का आकलन करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय मानव पीड़ा सूचकांक (International Human Suffering Index) को एकीकृत करें। यह जीवन की समग्र गुणवत्ता पर एक सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। विविध सूचकांकों को संलग्न करना : वैश्विक नवाचार सूचकांक, विधि का शासन सूचकांक, निर्धनता सूचकांक, भ्रष्टाचार बोध सूचकांक, लैंगिक समानता सूचकांक और विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक जैसे विभिन्न सूचकांकों को शामिल किया जाए। इनमें से प्रत्येक सूचकांक विकास और खुशहाली के विशिष्ट पहलुओं को संबोधित करता है और एक अधिक व्यापक मूल्यांकन में योगदान देता है। खुशहाली और कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना। एक समर्पित सूचकांक या संकेतकों का समूह स्थापित करें जो विशेष रूप से खुशहाली और कल्याण का मापन करते हो। इसमें खुशहाल भारत (Happy India) की दृष्टि के अनुरूप मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संबंध और समग्र जीवन संतुष्टि जैसे कारक शामिल हो सकते हैं। नियमित निगरानी और मूल्यांकन : चुने हुए सूचकांकों की नियमित रूप से निगरानी और मूल्यांकन के लिये एक सुदृढ़ प्रणाली लागू करें। इससे सुनिश्चित होगा कि नीतियाँ और हस्तक्षेप दीर्घावधि में खुशहाली और कल्याण को बढ़ावा देने के लक्ष्य के अनुरूप हैं। खुशहाली के लक्ष्यों के साथ नीति संरेखण : राष्ट्रीय नीतियों और विकास रणनीतियों को खुशहाली से संबंधित चिह्नित सूचकांकों और लक्ष्यों के साथ संरेखित करें। यह सुनिश्चित करेगा कि सरकारी पहलें नागरिकों की भलाई में प्रत्यक्ष योगदान करेंगी। शैक्षिक एवं जागरूकता कार्यक्रम : खुशहाली और कल्याण को प्राथमिकता देने की दिशा में सांस्कृतिक बदलाव को बढ़ावा देने के लिये शैक्षिक कार्यक्रम एवं जागरूकता अभियान क्रियान्वित करना चाहिये। इसमें मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक को कम करने, कार्य–जीवन संतुलन को बढ़ावा देने तथा सामाजिक संबंधों के महत्त्व पर बल देने संबंधी पहलें शामिल हो सकती हैं।

निष्कर्ष : आर्थिक विकास के साथ–साथ खुशी और कल्याण को महत्व देने वाले समग्र दृष्टिकोण को अपनाकर, भारत अधिक टिकाऊ और पूर्ण विकास पथ प्राप्त करने की आकांक्षा कर सकता है।

शिवम पाण्डेय
छात्र – बी.ए.एल.एल.बी.
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर



नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए प्रतिभागी



भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए प्रतिभागी





द्वितीय चक्र की प्रतियोगिता दिनांक 04 मार्च, 2025 को महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के लिए कुलपति प्रो. वन्दना सिंह द्वारा हरी झंडी दिखाते हुए ।



महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में अभिनव कीर्ति पाण्डेय, बी.ए.एल.एल.बी.भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए।



महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता के प्रतिभागी एवं शिक्षक।



महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में नाट्य प्रस्तुति करते हुए प्रतिभागी ।



महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता के प्रतिभागी एवं शिक्षकगण।



नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए प्रतिभागी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समाचार पत्रों में

छात्राओं ने नाटक के माध्यम से दिया सशक्तिकरण का संदेश

अमर भारती ब्यूरो।



● अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर नाट्य प्रस्तुति समेत हुई कई प्रतियोगिताएं

जौनपुर। शुक्रवार को कुलाधिपति एवं राज्यपाल उत्तर प्रदेश के निर्देश के क्रम में कुलपति प्रो० वंदना सिंह के संरक्षकत्व में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर संगोष्ठी भवन में भाषण एवं नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दहेज प्रथा उन्मूलन, बाल विवाह पर प्रतिबंध, विकसित भारत की संकल्पना, वृद्धाश्रम की जरूरत क्यों कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान एवं नाट्य प्रस्तुति प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत अहिल्या बाई होलकर, द्रौपदी वस्त्रहरण, श्रवण कुमार की अपने माता पिता के प्रति भक्ति, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश, राम वनवास, भरत मिलाप प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया।

इन सभी प्रतियोगिताओं में जो भी प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करेंगा उन प्रतिभागियों को 04 मार्च को महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी में द्वितीय चक्र की प्रतियोगिता समूह 4 के छः विश्वविद्यालयों के बीच आयोजन में भेजा जाएगा। निर्णायक मंडल के रूप में सल्तनत बहादुर महाविद्यालय बदलापुर के कार्यक्रम अधिकारी डॉ मुमताज अहमद अंसारी, डॉ सुशील एवं डॉ सिकंदर सर उपस्थित रहें।

कार्यक्रम का संचालन स्वयंसेवक अभिनव कीर्ति पाण्डेय ने किया। अतिथियों का स्वागत महिला अध्ययन केन्द्र की प्रभारी डॉ. जाह्नवी श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ शशिकांत यादव, कार्यक्रम संयोजक ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ राज बहादुर यादव, डॉ श्याम कन्हैया, डॉ मनोज कुमार पाण्डेय डॉ पूजा शुक्ला, स्वयंसेवक आनंद सिंह, प्रभात तिवारी, आनंद सिंह, सात्यम त्रिपाठी एवं बड़ी संख्या में छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

छात्राओं ने नाटक के माध्यम से दिया सशक्तिकरण का संदेश

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हुई कई प्रतियोगिताएं

स्वरससे ■ जौनपुर



कुलपति प्रो.वंदना सिंह के संरक्षण में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विवि एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर संगोष्ठी भवन में भाषण एवं नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता की गई। भाषण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दहेज प्रथा उन्मूलन, बाल विवाह पर प्रतिबंध, विकसित भारत की संकल्पना, वृद्धाश्रम की जरूरत क्यों? कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान एवं नाट्य प्रस्तुति प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत अहिल्या बाई होलकर, द्रौपदी वस्त्रहरण, श्रवण कुमार की अपने माता पिता के प्रति भक्ति, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश, राम वनवास, भरत मिलाप प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया।

इन सभी प्रतियोगिताओं में जो भी प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करेंगा उन प्रतिभागियों को 4 मार्च को महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी में द्वितीय चक्र की प्रतियोगिता समूह 4 के छः विश्वविद्यालयों के बीच आयोजन में भेजा जाएगा। निर्णायक मंडल के रूप में सल्तनत बहादुर महाविद्यालय बदलापुर के कार्यक्रम अधिकारी डॉ मुमताज अहमद अंसारी, डॉ सुशील एवं डॉ सिकंदर सर उपस्थित रहें।



आभार

"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च, 2025" हेतु मा0 कुलाधिपति जी द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा एक ही समय पर एक साथ समस्त छात्र–छात्राओं, अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों गोद लिए गए गांव के समस्त नागरिकों द्वारा दहेज न लेने एवं ना देने तथा नशा न करने का शपथ लिया गया। इसके लिए सर्वप्रथम मैं आभार प्रकट करना चाहूंगी माननीय कुलाधिपति जी के प्रति जिनके निर्देश के क्रम में समय–समय पर समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन हेतु विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को मंच प्रदान किया जा रहा है तथा जन जागरूकता फैलायी जा रही है, चाहे स्वच्छता हो, बाल–विवाह जैसा गंभीर विषय हो या फिर दहेज़ प्रथा एवं नशा उन्मूलन आदि जैसे तमाम विषयों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता, नाट्य मंचन जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जाने के निर्देश मिलते रहते है। ऐसे अभिभावक रूपी मा0 कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी के प्रति कोटिशः आभार।

आभार की अगली कड़ी में मैं मा0 कुलपति प्रो. वन्दना सिंह जी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगी जिन्होंने मुझ पर विश्वास जताते हुए मुझे "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" का नोडल अधिकारी नामित किया, माननीय कुलपति जी के कुशल मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है कि इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने पूरे उत्साह के साथ सहभाग किया।

आभार के इसी क्रम में मैं विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री महेंद्र कुमार जी के प्रति विशेष आभार प्रकट करना चाहूंगी जिनके उत्साह पूर्ण सहयोग के बगैर कार्यक्रम सफल ही नहीं हो सकता था। आभार के अगली कड़ी में परीक्षा नियंत्रक डॉ० विनोद कुमार सिंह, डॉ० राज बहादुर यादव, डॉ० शशिकांत यादव, डॉ० राकेश कुमार यादव चीफ वार्डेन प्रो० सौरभ पाल, डॉ० दिग्विजय सिंह राठौर, डॉ0 अनुराग मिश्र एवं समस्त सम्मानित आचार्य एवं प्रशासनिक अधिकारी जिन्होंने पर्यवेक्षक की भूमिका में रह कर महाविद्यालयों में जाकर कार्यक्रम सफल कराया, समस्त प्रशासनिक कर्मचारी एवं महाविद्यालयों के प्रबंधक तथा प्राचार्य जिनके सहयोग ने कार्यक्रम को सिर्फ कार्यक्रम ही नहीं बल्कि उत्सव का स्वरूप दे दिया।

डॉ. जान्हवी श्रीवास्तव
नोडल अधिकारी
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

जौनपुर : एक समृद्ध विरासत



विभिन्न संस्कृतियों की बाकी–झाँकी का साक्षी रहा जनपद जौनपुर अपनी ऐतिहासिकता को बहुत अतीत तक समेटे हुए है। सदानीरा गोमती के तट पर बसा यह शहर एक परम्परा के अनुसार महर्षि यमदग्नि की तपोस्थली रहा है जिस कारण इसका प्रारंभिक नाम यमदग्निपुर पड़ा तथा कालान्तर में यमदग्निपुर ही जौनपुर के रूप में परिवर्तित हो गया। कतिपय विद्वानों ने इस धारणा पर भी बल दिया है कि यहाँ प्राचीन भारत में यवनों का आधिपत्य रहा है जिस कारण इसका नाम प्रारम्भिक दौर में यवनपुर से कालान्तर में जौनपुर हो गया। जौनपुर की अधिष्ठात्री देवी माँ शीतला चौकियाँ, शक्ति उपासना की केन्द्र है। शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता–शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः का जयकारा जनपद वासियों को अनिष्टकारी व्याधियों एवं दुर्घटनाओं से सदा रक्षा करता है।



मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोतों ने जौनपुर की स्थापना का श्रेय फिरोजशाह तुगलक को दिया है, जिसने अपने भाई मुहम्मद बिन तुगलक (जूना खां) की स्मृति में इस नगर को बसाया और इसका नामकरण भी उसके नाम पर किया। फिरोजशाह तुगलक ने जौनपुर की स्थापना 1359 ई. में की तथा 1360 ई. में जौनपुर किले की नींव रखी। जौनपुर सल्तनत वर्ष 1394–1479 ई. तक उत्तर भारत की एक स्वतंत्र राजधानी रही जिसका शासन शर्की सल्तनत द्वारा संचालित था। लेकिन एक खास बात यह है कि जौनपुर राज्य का संस्थापक मलिक सरदार (सरवर) फिरोज शाह तुगलक के पुत्र सुलतान मुहम्मद का दास था जो अपनी योग्यता से 1389 ई. में वजीर बना। सुलतान महमूद ने उसे मलिक–उस–शर्क की उपाधि से नवाजा था। 1399 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके पद के कारण ही उसका वंश शर्की–वंश कहलाया। ज्ञातव्य है कि उसको कोई संतान नहीं थी, उसके बाद उसका गोद लिया हुआ पुत्र मुबारक शाह गद्दी पर बैठा था। 1402 ई. में मुबारक शाह की मृत्यु हो गयी। इसके बाद उसका भाई इब्राहिमशाह शर्की जौनपुर राज सिंहासन पर बैठा। इब्राहिम शाह के बाद उसका पुत्र महमूदशाह फिर हुसैन शाह तथा अन्ततः जौनपुर 1479 ई. के बाद दिल्ली सल्तनत का भाग बन गया।



जौनपुर में सरवर से लेकर शर्की बंधुओं ने 75 वर्षों तक स्वतंत्र राज किया। इब्राहिम शाह शर्की (1402 ई.–1440 ई.) के समय में जौनपुर सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत उपलब्धि हासिल कर चुका था। उसके दरबार में बहुत सारे विद्वान थे जिन पर उसकी राजकृपा रहती थी। उसके राज–काल में अनेक ग्रंथों की रचना की गयी। तत्कालीन समय में जौनपुर शिक्षा का बहुत बडा केंद्र था। यह भी कहा जाता है कि इब्राहिम शाह शर्की के समय में ईरान से 1000 के लगभग आलिम (विद्वान) आये थे जिन्होंने पूरे भारत में जौनपुर को शिक्षा का बहुत बड़ा केंद्र बना दिया था। इसी कारण जौनपुर को 'शीराज–ए–हिंद' कहा गया। शीराज का तात्पर्य श्रेष्ठता से होता है। उसी समय जौनपुर में कला–स्थापत्य की एक नई शैली का जन्म हुआ, जिसे जौनपुर अथवा शर्की शैली कहा गया। कला–स्थापत्य की इस शैली का निदर्शन यहाँ पर आज भी अटाला मस्जिद में किया जा सकता है। अटाला मस्जिद की आधारशिला फिरोजशाह तुगलक द्वारा 1376 में की गयी जिसे 1408 में इब्राहिम शाह ने पूरा किया।

जौनपुर में गोमती नदी के शाही पुल का निर्माण कार्य मुगल बादशाह अकबर ने 1564 ई. में प्रारंभ करवाया जो 1569 ई. में बनकर तैयार हुआ। यह शाही पुल अकबर के सूबेदार मुनीम खाँ के निरीक्षण में बना। शर्की सुल्तानों ने जौनपुर में कई सुन्दर भवन, एक किला, मकबरा तथा मस्जिदें बनवाई। जौनपुर की जामा मस्जिद को इब्राहिम शाह ने 1438 ई. में बनवाना प्रारंभ किया था और इसे 1442 ई. में इसकी बेगम राजीबीबी ने पूरा करवाया। 1447 ई. में चार अंगुल मस्जिद को सुल्तान इब्राहिम के अमीर खालिस खाँ ने बनवाया। जौनपुर की सभी मस्जिदों का वास्तु प्रायः एक जैसा है। शेरशाह सूरी की सारी शिक्षा–दीक्षा जौनपुर में हुई। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और 'खयाल' के विकास में हुसैन शाह (1458–1479 ई.) का अपना योगदान रहा। इस दौरान कई रागों की रचना की गयी जिसमें प्रमुख हैं 'मल्हार–स्याम', 'गौर–स्याम', 'भोपाल–स्याम', 'जौनपुरी बसन्त', 'हुसेनी' या 'जौनपुरी असावरी' जिसे राग जौनपुरी कहा जाता है।



भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जनपद के अमर शहीदों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा में अपना जीवन बलिदान कर दिया। आज भी जनपद के विभिन्न स्थानों पर स्थापित शहीद स्तम्भ उनके बलिदान की याद दिलाते हैं। यहाँ के लोगों ने साहित्य, प्रशासनिक सेवा और विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में पूरी दुनिया में जनपद का नाम रोशन किया है। इसकी निरन्तरता अद्यतन बनी हुई है।

कुलगीत

वीर बहादुर सिंह विश्वविद्यालय का हरितांचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
पूर्व दिशा का ताज रहा है,
"भारत का शीराज रहा है,
यह यमदग्नि-यजन की बेदी यह "कुतबन" का मादल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
दो धर्मों की मिलन-धुरी यह,
राग सलोना "जौनपुरी" यह,
संघर्षों की झंझर में झंकृत जिसके जीवन-पल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नये सृजन की सजी आरती,
उतरी वीणा लिये भारती,
नव-जागरण-थाल में अर्पित यह पावन तुलसी-दल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
कला-शिल्प-विज्ञान कलेवर,
छलकाये प्रकाश के निर्झर,
धेनुमती-तमसा-गंगा का यह पावन क्रीड़ास्थल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नीति हमारी सरल-तरल हो,
जिसमें जन का क्षेम-कुशल हो,
गौतम-कपिल-कणाद-पंतजलि हो आदर्श अचंचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।

